हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-A-DTVF-17

निर्धारित समयः तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंकः 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 01 16/07/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 2 1 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 148 टिप्पणी (Remarks): उत्तम प्रयास

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) पहाड़ी हिंदी

संस्कृत की परंपरा से निकलकर आर्यभाषाएँ पालि और प्राकृत की परंपरा में पहुँची तो इसी समय वर्तमान उत्तराखण्ड के क्षेत्र (पौड़ी, गढ़वाल, नैनीताल इत्यादि) की भाषाओं पर अनार्य भाषाओं जैसे कि तिब्बती, चीनी, बर्मन आदि के प्रभाव से खस प्राकृत का प्रादुर्भाव हुआ जो खस अपभ्रंश से होते हुए पहाड़ी हिन्दी के रूप को धारण करने लगी।

पहाड़ी हिन्दी उपभाषा में मुख्यतः दो बोलियाँ आती हैं : कुमाऊँनी तथा गढ़वाली। वर्तमान तथा ब्रज के चरम के समय में इन बोलियों पर ब्रज एवं राजस्थानी का प्रभाव रहा तथा अनार्य तत्व धीरे-धीरे समाप्त होते गए।

पहाड़ी हिन्दी की ध्वनिगत विशेषताओं में 'ऑ' का प्रयोग, ओकारान्तता आदि प्रमुख हैं जबकि व्याकरणगत विशेषताओं को देखें तो एकवचन से बहुवचन बनाने की प्रक्रिया में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कुमाऊँनी में 'ड़' से 'न' होने की प्रवृत्ति (~~उदा~~ उदाहरण घोड़े- घोड़ा) तथा गढ़वाली में 'ड़' से 'ड़ँ' (घोड़े → घोड़ँ) आदि प्रमुख हैं। वर्तमान में इस वर्ग को बोलने वालों की संख्या 5 लाख से अधिक नहीं है।

6/10

Good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रहीम के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अब्दुल रहीम खानखाना अकबर के प्रधान सेनापति तथा दरबारी कवि थे। इनकी मुख्य ख्याति इनकी कविता को लेकर ही है।

रहीम भक्तिकाल के ~~उपस~~ कृष्णभक्ति परम्परा के कवियों में शुमार किये जाते हैं एवं मीरा तथा रसखान आदि के समकालीन माने जाते हैं। यूँ तो इनकी बोली में ब्रजभाषा का प्रभाव अधिक है यथा

" रहिमन ओछे नरन सों बैर भली न प्रीति
काटे चाटे स्वान के, दुहूँ भाँति ~~विप~~
विपरीत "

परन्तु ध्यान से देखने पर पता चलता है कि व्याकरण तो ब्रज भाषा की है परन्तु कुछ शब्दों (नरन, सों, दुहूँ) आदि को छोड़कर सारे शब्द खड़ी बोली के समकक्ष ही हैं। ~~ए~~ एवं 'ईकारान्तता' तथा आकारान्तता की प्रवृत्ति धारण किये हुए हैं। यथा →
स्वान, भली, ~~इत्यादि~~ आदि।

रहीम की कविता में खड़ी बोली का सबसे परिनिश्चित स्वरूप उनके काव्य संग्रह 'मदनाष्टक' में मिलता है जिसका एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण दर्शनीय है
"पकरि परम प्यारे साँवरे को मिलाओ
असल अमृत का प्याला क्यों न मुझको
पिलाओ"
उपरोक्त पंक्तियों में खड़ी बोली का वही
स्वरूप है जो वर्तमान में मिलता है।

4.5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) अवधी के अरघान जायसी

मलिक मुहम्मद जायसी भक्तिकालीन 'निर्गुण प्रेमाश्रयी' धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं जिसे सूफी काव्यधारा भी कहा जाता है।

सूफी काव्यधारा की प्रशस्ति 'ठेठ अवधी' का प्रयोग कर माधुर्यपूर्ण प्रबंध काव्यों की रचना को लेकर है और जायसी को इस परंपरा का ध्वजवाहक कहा जाता है।

जायसी ने अवधी के लोकमधुर स्वरूप को लेते हुए 'दंगरा' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जो अवध क्षेत्र में प्रथम वर्ष के लिए प्रयुक्त होता है। उन्होंने लोक-मुहावरे को अपने काव्य में स्थान देते हुए "सूखी डंगरि न निकसै धाऊ" तथा 'हिय फटा' जैसे मुहावरों का प्रयोग किया जिससे पाठक के समक्ष लोकपरंपरा के चित्र सजीव हो उठते हैं।

जायसी ने कथाएँ भी वही ली जो उस समय के अवध क्षेत्र में प्रचलित थीं जैसे कि कृष्ण (कन्हावत) पद्मावती (पद्मावत) इत्यादि। एवं उन्हीं में सर्वज्ञ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का ऐसा स्वरूप प्रदर्शित किया कि पाठक भावोन्माद से भर उठता है जिसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है :

- ~~पेड़ लागै लाय लागे~~
  "यह तन जारौं छार कै कहौं कि पवन उड़ाय
  मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाँव"

- इन्हीं विशेषताओं के कारण आचार्य शुक्ल ने उन्हें 'अवधी का अरघान' कहा है तथा 'ठेठ अवधी के माधुर्य' की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अपभ्रंश के भेद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश के भेदों को लेकर भाषाविदों में विवाद की स्थिति रही है। मार्कण्डेय जहाँ नागर, 'उपनागर' तथा 'व्राचड़' अपभ्रंश में इसे विभाजित करते हैं वहीं नेमिसाधु इसे 'ग्राम्य', नागर आदि भेदों में।

डा० रामविलास शर्मा तथा डा. नामवर सिंह आदि भाषावैज्ञानिकों ने भी अपभ्रंश के भेद अपनी-अपनी दृष्टि तथा समझ के अनुसार करने की प्रयास किया है और अन्ततः आज सर्वमान्य मत यह है कि संस्कृत से भाषा के विकास की परंपरा में प्रत्य पालि से क्षेत्रविशेषानुसार कई प्राकृत रूपों का उदय हुआ तथा प्रत्येक प्राकृत रूप उसके परवर्ती अपभ्रंश रूप में परिवर्तित हुआ अतः अपभ्रंश के निम्नलिखित 5 भेद माने गये हैं।

I) ~~पूर्व~~ मागधी अपभ्रंश → मगध तथा बिहार के क्षेत्रों में प्रयुक्त

II) अर्धमागधी अपभ्रंश : उत्तरप्रदेश के अवध क्षेत्र, बुंदेलखण्ड इत्यादि में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

iii) ~~शौरस~~ शौरसेनी अपभ्रंश – पश्चिमी क्षेत्र में प्रयुक्त यथा बृजभाषा इत्यादि

iv) राजस्थानी अपभ्रंश

v) खस अपभ्रंश

अपभ्रंश के इन्हीं स्वरूपों का हिन्दी की विभिन्न उपभाषाओं में पर्यवसान हुआ तथा आधुनिक हिन्दी का विकास हुआ।

Good 6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा-क्षेत्र से तात्पर्य उस भौगोलिक क्षेत्र से है जहाँ हिन्दी का कोई भी रूप या तो बोला-समझा जाता है या फिर किसी अन्य रूप में प्रयुक्त होता है।

हिन्दी क्षेत्र की बात करें तो भारत के 10 राज्यों में हिन्दी को प्रथम भाषा का दर्जा प्राप्त है तथा यहाँ शासकीय, साहित्य एवं शिक्षा आदि सभी प्रयोजनों में इसका प्रयोग होता है। ये 10 राज्य हैं: मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखण्ड, राजस्थान हरियाणा, हिमांचल प्रदेश तथा दिल्ली। ~~तथा~~

इसके अतिरिक्त कई राज्य ऐसे हैं जहाँ हिन्दी को द्वितीय भाषा का दर्जा प्राप्त है तथा वहाँ भी इसे संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता है यथा गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा ~~व~~ पंजाब इत्यादि।

इन क्षेत्रों के अलावा दक्षिण में हैदराबाद के आसपास का क्षेत्र दक्खिनी हिन्दी के लिए जाना जाता है।

Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अंग्रेजी शासन के दौरान बिहार से मॉरीशस, फिजी आदि में बसे लोग आज भी हिन्दी के भोजपुरी स्वरूप का प्रयोग करते हैं। विदेश के कई विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी के पठन पाठन का कार्य होता है अत: इन्हें भी हिन्दी भाषा क्षेत्र में सम्मिलित किया जा सकता है।

Good 6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'राजस्थानी हिंदी' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

राजस्थानी हिन्दी उस उपभाषा वर्ग को कहते हैं जिसमें मारवाड़ी, मालवी, मेवाती तथा जयपुरी / ढूँढ़ाणी बोलियाँ आती हैं।

इस उपभाषा वर्ग का भौगोलिक क्षेत्र मुख्यतः पूरा राजस्थान, मध्यप्रदेश का पश्चिमी भाग तथा हरियाणा में ~~अलव~~ पानीपत तक माना जाता है जो कि अलवर तथा भरतपुर के आसपास का क्षेत्र है।

~~अत~~ व्यक्तिगत विशेषताओं में राजस्थानी 'ट वर्ग' प्रधान उपभाषा है एवं ओकारान्तता इसकी प्रमुख प्रवृत्ति है। अपने ओजगुण के लिए विख्यात ~~इस~~ इस उपभाषा वर्ग की बोलियों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं;

मारवाड़ी

राजस्थान के मारवाड़ी समाज तथा मारवाड़ क्षेत्र से संबंधित इस बोली का विकास सर्वाधिक हुआ है इसका कारण मारवाड़ी समाज का सम्पन्न होना तथा व्यापारिक कारणों से भौगोलिक क्षेत्र का विस्तृत होना है। मारवाड़ी में अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है तथा ओकारान्त

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शब्दों का प्रयोग जैसे कि म्हारो, थारो इसकी प्रमुख विशेषता है। 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग भी प्रचलित है। कर्ता में 'को' के स्थान पर 'नै' तथा कर्म में 'सूँ' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है।

मालवी

मालवी पश्चिमी मध्यप्रदेश (उज्जैन, इंदौर) के साथ-साथ राजस्थान के कोटा, बूँदी क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली है।
इसमें 'ऐ' की जगह 'ए' तथा 'औ' की जगह 'ओ' का प्रयोग विशिष्ट है (उदाहरण औरत, मैंने)
आदि अक्षरों का दीर्घीकरण भी इसकी प्रमुख प्रवृत्ति है यथा लड़की के स्थान पर लाड़की
प्रमुख सर्वनामों में 'तैं', 'तू' इत्यादि प्रमुख हैं।

जयपुरी / ढूँढाणी

पूर्वी राजस्थान में प्रचलित इस बोली में ण के स्थान पर 'न' का प्रयोग (मनै)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा अल्पप्राणीकरण (हात, ब्रक) इत्यादि प्रमुख विशेषताएँ हैं। मनै, तनै आदि का प्रयोग भी प्रचलित है।

मेवाती

हरियाणा के मेवात क्षेत्र से सम्बन्धित इस बोली की विशेषताएँ लगभग वही हैं जो अन्य बोलियों की हैं।

अतः राजस्थानी उपभाषा वर्ग एक समृद्ध भाषिक परम्परा है एवं हिन्दी क्षेत्र के वैविध्य में इसका विशिष्ट योगदान है।

Good 11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक हिन्दी आर्यभाषा के उस स्वरूप को कहते हैं जो पालि, प्राकृत, अपभ्रंश की परंपरा से होते हुए 11वीं शताब्दी से 13वीं-14वीं शताब्दी तक विद्यमान रहा। इसे ~~प्राचीन तथ~~ मध्यकालीन तथा आधुनिक आर्यभाषाओं के बीच की कड़ी माना गया है। इसकी व्याकरणिक विशेषताएँ निम्नानुसार हैं।

संज्ञा तथा कारक व्यवस्था

- वियोगीकरण की प्रक्रिया लगभग अपने अंतिम दौर में पहुँच गई तथा परसर्गों का स्वरूप सुनिश्चित होने लगा। निर्विभक्तिक प्रयोग जैसे 'बिरह तवाइ तपाइ' तथा 'हिं' विभक्ति ~~सं~~ का कई कारकों में प्रयोग जारी रहा

यथा: शय्या गरबहिं बोले नाहीं (करण)
चरनोदक लै सिरहिं चढ़ाग (अधिकरण)

परसर्ग इस प्रकार हैं।

कर्ता — 0, ने
कर्म — को,
करण - से
अधिकरण — में, पर
सम्बन्ध - का, की, के
इत्यादि।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वचन व्यवस्था

अपभ्रंश से शुरू हुआ दो वचनों का प्रयोग (एकवचन तथा बहुवचन) और स्थायी हो गया। जहाँ एकवचन से बहुवचन बनाने का स्वरूप स्पष्ट होने लगा।

उदाहरण: हाथ → हाथन्ह
आँख → अँखियाँ
बेटा → बेटे इत्यादि।

लिंग व्यवस्था

नपुंसक लिंग का यहाँ तक आते-आते पूर्णतः लोप हो गया तथा पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में ही सारे शब्द विभाजित होने लगे पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए अन (ग्वाल- ग्वालन), इया आदि प्रत्ययों का प्रयोग हुआ।

काल

भूतकाल में कृदंतीय स्वरूप, वर्तमान में संस्कृत का स्वरूप तथा भविष्यकाल में 'स' और 'ह' रूप प्रचलन में रहा।

विशेषण

संख्यावाची विशेषण और परिपक्व हो गए तथा विशेषण लिंग वचनानुसार

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विकारी होने लगे।

सर्वनाम

सर्वनामों की जटिलता में कमी आई तथा आधुनिक स्वरूप के समकक्ष सर्वनाम प्रयुक्त होने लगे यथा — तू, तूहि, तुम्हार, मैं, मोहार आदि।

कुल मिलाकर प्राचीन हिन्दी की व्याकरणिक व्यवस्था मानकीकरण की दिशा में एक सार्थक विकास है।

9/15 Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) संत-साहित्य में खड़ी बोली के प्रयोग पर विचार कीजिए। 15

~~संत साहित्य से तात्पर्य मध्यप्रदेश के पूर्वी तथा पश्चिमी भाग में प्रचलित सिद्ध तथा~~

संत साहित्य से तात्पर्य भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानाश्रयी धारा से है। इस धारा के प्रमुख कवियों में कबीरदास, रैदास, मलूकदास आदि प्रमुख हैं।

संत साहित्य के कवि स्थान-स्थान पर विचरण करते थे ~~तथा~~ इसलिए उनकी भाषा पर कई भौगोलिक क्षेत्रों का असर देखने को मिलता है तथा इनकी भाषा को पंचमेली खिचड़ी या सधुक्कड़ी के नाम से जाना जाता है। सिद्ध-नाथ ~~साहित्य~~ परंपरा से प्रभावित इस धारा में खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप का उदाहरण द्रष्टव्य है -

" जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर-बदर फिरते
हमारा यार है हममें, हमन को इंतजारी क्या "

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पंक्तियों में 'हेमन' जैसे प्रयोग पूर्वीपन को तथा पर-बदर जैसे प्रयोग फारसीपन को तो दर्शाते हैं किन्तु शेष सभी शब्द खड़ी बोली के स्वरूप को धारण करते हैं। 'हमारा' में आकारान्तता, अकारान्तता (यार..) आदि सब वही प्रयोग हैं जो आधुनिक खड़ी बोली में हैं।

इसी प्रकार मलूकदास का एक दोहा भी खड़ी बोली के स्वरूप का उत्कृष्ट उदाहरण है—

"अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम"

उपरोक्त पंक्तियों में 'ईकारान्तता', अनुनासिक प्रयोग आदि खड़ीबोली के समकक्ष ही प्रदर्शित होते हैं।

~~अतः~~ संत साहित्य ने खड़ी बोली के विकास में संवेदना तथा भाव-संप्रेषण के स्तर पर भी महत्वपूर्ण योगदान दिया और भाषिक परंपरा को एक नयी—

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

रया इस स्थान में प्रश्न ग्या के अतिरिक्त कुछ लिखें।

lease do not write ything except the estion number in s space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृंलाग दी।

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) विद्यापति की सौंदर्य चेतना का वैशिष्ट्य

विद्यापति आदिकाल के प्रमुख कवियों में सम्मिलित किये जाते हैं तथा उनका स्थान मैथिली, हिन्दी और बंगाली साहित्य तीनों में अत्यन्त उच्च माना जाता है।

विद्यापति अपने सौंदर्यबोध के लिए विशेष प्रतिष्ठा के पात्र रहे हैं। इनका सौन्दर्यबोध न तो भक्तिकालीन कवियों की तरह दैवीय है और न ही छायावादी कवियों की तरह वायवीय। वे सौन्दर्य को मानव ग्राह्य, सहज रूप में प्रस्तुत करते हैं।

विद्यापति का सौन्दर्य अपरूप का सौन्दर्य है उनकी राधा अपनी सखियों से कहती हैं "ए सखि देखल एक अपरूप सुनइत मानव सपन सरूप"

विद्यापति कृष्ण के सौन्दर्य को चरमावस्था तक ले जाते हैं और जीवन भर दर्शन करते रहने पर भी नयनों की तृप्ति प्राप्त नहीं होती

"जनम अवधि भर रूप निहारल,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नयन न तिरपित भेल

विद्यापति ने सौन्दर्य को आम जन सुलभ बनाने का प्रयास किया है एवं इसे अभिजात्य वर्ग तक सीमित न रखते हुए प्रचलित भाषा 'अवहट्ट' में ही संप्रेषित किया है।

अपनी सौन्दर्य चेतना के लिए विद्यापति साहित्येतिहास में सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ

अज्ञेय कहानियों के उस दौर के लेखक हैं जब प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध से व्याप्त निरर्थकता व तबाही के कारण सार्त्र के 'अस्तित्ववाद' व फ्रॉयड के 'मनोविश्लेषणवाद' का महत्व साहित्य में बढ़ने लगा एवं सामाजिक यथार्थ की जगह मनोविश्लेषणवादी कहानियाँ लिखी जाने लगी। इस कथ्य को संप्रेषित करने के लिए अज्ञेय ने भिन्न शिल्पगत विशेषताओं का सहारा लिया है इस प्रकार हैं:-

I) कथानक लगभग खत्म हो गया है तथा कथानक के आदि, मध्य, उत्कर्ष के ढाँचे को लेकर कोई आग्रह अज्ञेय की कहानियों में नहीं दिखता।

II) घटनाओं तथा चरित्रों की अपेक्षा स्थितियों तथा इससे उत्पन्न मानसिक द्वंद्वों का वर्णन प्रमुखता से आया है।

III) अज्ञेय ने शब्दार्थ सघनता को महत्व देते हुए शब्द चयन में विशेष सतर्कता बरती है। इनके यहाँ शब्दों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

का अपव्यय दिखाई नहीं देता।

iv) कहानियों का कोई उद्देश्य नहीं है। स्थितियों का वर्णन मात्र ही एकमात्र लक्ष्य है जिससे चेतन तथा अचेतन की फाँक स्पष्ट हो जाए।

v) प्रतीकात्मकता, बिंबात्मकता आदि का सहारा भरपूर लिया गया है।

6/10 Good

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इप्टा

इंडियन पीपुल्स थियेटर एशोशिएशन की प्रसिद्धि समाजवादी नाटकों के मंचन को लेकर नाटकों के विकास में अहम मानी जाती है।

'इप्टा' विश्व भर में प्रचलित 'पीपुल्स थियेटर्स' की कड़ी का ही भारतीय स्वरूप है, एवं 50 के दशक में समस्त मार्क्सवादी नाटककारों एवं लेखकों का स्थान माना जाता रहा है। रांगेय राघव, रामविलास शर्मा समेत हिन्दी के समस्त प्रमुख समाजवादी नाटककार इससे जुड़े रहे

अपने समय के जाने माने अभिनेताओं ने भी इप्टा में सक्रिय भूमिका निभाई है। बलराज साहनी जैसे कलाकार इसे सामाजिक मंच मानते हुए प्रदर्शित नाटकों में अभिनय करते रहे हैं।

आज भी इप्टा रंगमंच के क्षेत्र में सक्रिय योगदान निभा रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) अकहानी की विशेषताएँ

अकहानी फ्रांस के 'एंटी स्टोरी मूवमेंट' से प्रभावित आंदोलन है जो कि नई कहानी के विरोध में 60 के दशक में पैदा हुआ। प्रमुख अकहानियों में दूधनाथ सिंह की 'रीछ', रविन्द्र कालिया की 'नौ साल छोटी पत्नी' आदि प्रमुख हैं। इसकी विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

(क) परंपराओं का तिरस्कार : अकहानी सभी परंपराओं से सम्बन्ध तोड़ने की उद्घोषणा करती है तथा माता-पिता बड़ों एवं परंपरा से जुड़ी सभी संवेदनाओं के प्रति यहाँ तिरस्कार का भाव दिखता है।

(ख) यथार्थ का नग्न संप्रेषण अकहानी की प्रमुख विशेषता है जो जैसा जिस रूप में है उसे उसी रूप में कह देने का भाव नजर आता है।

(ग) यौन उन्मुक्तता के चित्र अकहानी की प्रमुख विशेषता है। यहाँ समस्त मर्यादाओं का अतिक्रमण करते हुए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विवाहेतर सम्बन्ध, पशु सम्पर्क, समलैंगिक सम्पर्क आदि के चित्रों को भी प्रदर्शित किया गया है।

(घ) त्रासदी, संबंधों की टूटन, चरम वैयक्तिकता आदि का संप्रेषण।

शिल्प

~~1) अकहानी के चरित्र हेय, कुत्सित, चोर उचक्के आदि होते हैं। कहीं-कहीं~~

b) अकहानी अमूर्त शिल्प को लेकर चलती है एवं सरल संप्रेषण, कथानक का अभाव एवं भाषा का प्रचलित रूप इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

Good 6/16

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) नाटककार रामकुमार वर्मा

रामकुमार वर्मा हिन्दी नाटक की उस परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो भारतेन्दु, जयशंकर प्रसाद आदि से होते हुए इन तक पहुँची। सांस्कृतिक आदर्शवाद एवं राष्ट्रीय चेतना से व्याप्त इस धारा को रामकुमार वर्मा पुन: उत्थान की ओर ले गए।

इनके नाटक मुख्यत: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं एवं संस्कृति के गरिमामयी वर्णन को कथानक में ढालते हैं। एकतरफ जहाँ 'पृथ्वीराज की आँखे' नाटक में वर्मा जी विदेशियों के हाथों हार को भी गरिमामयी स्वरूप प्रदान करते हैं एवं कर्तव्यनिष्ठा व शान से जोड़ते हैं वही 'कौमुदी महोत्सव' के माध्यम से वे चन्द्रगुप्त की प्रतिष्ठा को स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

शिल्प के स्तर पर देखें तो वर्मा जी के नाटकों में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण भाषायी तत्समता पायी जाती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो कि स्वाभाविक भी है। कथानक का सुगठित ढाँचा, छोटे - छोटे संवाद एवं पर्याप्त रंगमंचीय संकेत इनके नाटकों की रंगमंचीयता को भी परिपक्वता प्रदान करते हैं।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कोणार्क नाटक पर नाट्यवस्तु एवं रंगमंचीयता की दृष्टि से विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कोणार्क 'जगदीशचन्द्र माथुर' द्वारा रचित वस्तुगत एवं शैल्पिक उत्कृष्टता का उपयुक्त उदाहरण है।

नाट्यवस्तु के संदर्भ में बात करें तो कोणार्क पृष्ठभूमि तो ऐतिहासिक लेता है तथा कोणार्क के जीर्ण-शीर्ण खंडहरों के इर्द-गिर्द घूमता है परन्तु भाव संप्रेषण आधुनिक परिस्थितियों का ही करता है। इसमें महाराजा नरसिंह देव, विशु तथा धर्मपद के माध्यम से जो त्रिस्तरीय संघर्ष संप्रेषित किया गया है वह आधुनिक मानव के तथा रचनाकार के द्वंद्व का ही परिचायक है। राजसत्ता तथा जनसत्ता, नई पीढ़ी तथा पुरानी पीढ़ी एवं सर्जना तथा विध्वंस के बीच के संघर्ष के बीच पिसते कलाकार की मनःस्थिति आज भी वैसी ही है जैसी कोणार्क में है। धर्मपद के माध्यम से माथुर जी बताना चाहते हैं कि रचनाकार यदि सामाजिक व राजनैतिक जीवन से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तटस्थ होकर संघर्ष से विमुक्त हो जाएँगे तो विध्वन्स का आमन्त्रण तय हो जाता है। आरंभ और उत्कर्ष के बीच संघर्ष की सीढ़ी भी महती आवश्यक है।

शिल्पगत - अपनी शिल्पगत तथा रंगमंचीय दृष्टि के लिए भी कोणार्क साहित्येतिहास में सम्मानित है। जयशंकर प्रसाद के समय में नाटक तथा रंगमंच में आई दूरी को मिटाने तथा नाटक को पुनः रंगमंच से जोड़ने का प्रयास करते हुए माथुर जी ने पर्याप्त रंगसंकेत दिए हैं। प्रकाश, ध्वनि एवं अभिनय संकेतों की सुलभता निर्देशक का कार्य बेहद आसान कर देती है एक उदाहरण द्रष्टव्य है

" झीने अंधकार में कोणार्क के खंडहर की झलक दीख पड़ती है "

इसी प्रकार " जब विशु मूर्ति से बात करता है तो उसके प्रत्येक वाक्य की अलग सत्ता है, बीच में विराम तथा हर वाक्य के बाद मुद्रा तथा ध्वनि में परिवर्तन है" आदि अभिनय संकेत

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कोणार्क की रंगमंचीयता को उत्कृष्टता की ओर ले जाते हैं।

अपने शैल्पिक कौशल तथा अद्भुत नाट्यवस्तु के लिए कोणार्क का नाम सफल नाटकों की श्रेणी में हमेशा गिना जाएगा।

12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास, जार्ज ग्रियर्सन और मिश्रबंधु के योगदान पर प्रकाश डालिए। 30

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नाभादास

नाभादास हिन्दी साहित्येतिहास के अनौपचारिक लेखन परंपरा के प्रणेता माने जाते हैं। इन्होंने 'भक्तमाल' परंपरा को ग्रंथ में व्यवस्थित करते हुए लगभग 200 भक्त कवियों का वर्णन 214 छंदों के माध्यम से किया है।

साहित्येतिहास लेखन का प्रयास तो भक्तमाल द्वारा नहीं किया गया था परन्तु उस समय के कवियों जैसे कबीर, रैदास, मध्वाचार्य, रामानुजाचार्य, गुरुनानक, मीरा आदि का वर्णन भक्तमाल को महत्वपूर्ण ग्रंथ बना देता है।

वर्णक्रमानुसार व्यवस्थित वर्णन में कवियों के लोकप्रचलित स्वरूप का प्रदर्शन है तथा इनकी चमत्कारपूर्ण सामाजिक छवि को स्थापित करने का प्रयास नाभादास ने किया है

एक उदाहरण द्रष्टव्य है

" कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पथदर्शनी।

इसी प्रकार मीरा के वर्णन का पद भी उत्कृष्ट है।

नाभादास के ग्रंथ में इतिहासबोध की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए क्योंकि यह भक्तों के वर्णन का प्रयास मात्र था।

जार्ज ग्रियर्सन

हिन्दी साहित्येतिहास की औपचारिक लेखन परंपरा में जार्ज ग्रियर्सन का स्थान अति महत्वपूर्ण है। इन्होंने 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' के तत्वाधान में सन् 1889 में 'माडर्न लिटरेचर ऑफ नार्दर्न हिन्दुस्तान' लिखा तथा इतिहासबोध से परिपक्व ग्रंथों की परंपरा की शुरुआत की।

"ग्रियर्सन ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ~~नामकरण~~ कालविभाजन व नामकरण का प्रयास किया। हालाँकि कालविभाजन व नामकरण में यादृच्छिकता हावी होती दिखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please don't write anything except question number in this space)

इन्होंने कुछ कालों को व्यक्तियों के ~~नाम~~, कुछ को साहित्यिक प्रवृत्तियों के तथा कुछ को निर्विशेष आधार बनाकर [illegible]। नामकरण किया। यथा 700 से 1300 ई को 'चारणकाल', मुगलशासन, कंपनी शासन, विक्टोरिया काल इत्यादि इस कारण कालों की संख्या अधिक हो गई

इनके ग्रंथ की प्रमुख विशेषता ऐतिहासिक प्रमाणिकता का ध्यान रखने को लेकर है। इन्होंने जहाँ भी तथ्य लिखे उसके स्रोत को भी अंकित किया।

भाषाई समझ के आधार पर देखें तो इन्होंने हिन्दी, फारसी व प्राकृत को अलग भाषा मानकर विकसित समझ को प्रस्तुत किया। इनके द्वारा भक्तिकाल को स्वर्णकाल की संज्ञा देना आज भी सर्वमान्य है

हालाँकि भक्तिआंदोलन का उद्भव ईसाईयत के प्रभाव में खोजने, विद्यापति के घोर श्रृंगारिक पदों को भक्ति बताने तथा बिहारी को यूरोप के सभी कवियों से श्रेष्ठ बताने का कारण ये

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आलोचना के भी घेरे में रहे हैं परन्तु साहित्येतिहास में परिपक्वता का इनका प्रयास अप्रतिम है।

मिश्रबंधु

मिश्रबंधु गणेश बिहारी, शुकदेव बिहारी तथा श्यामबिहारी मिश्र की त्रिमूर्ति को कहा जाता है। इन्होंने अपने ग्रंथ 'मिश्रबंधु विनोद' में नामकरण का एक परिपक्व प्रयास किया तथा साहित्येतिहास लेखन को एक नई दिशा प्रदान की। इनके कालों का विभाजन ~~[illegible]~~ प्रामाणिक तथा नामकरण विशिष्ट प्रवृत्तियों पर है। जो इस प्रकार है

- प्रारंभिक काल
  - ~~[illegible]~~ पूर्व प्रारंभिक
  - उत्तर प्रारंभिक
- मध्यकाल
  - पूर्व मध्यकाल
  - प्रौढ़ मध्यकाल
- अलंकृत काल
  - पूर्व अलंकृत काल
  - उत्तर अलंकृत काल
- परिवर्तन काल
- आधुनिककाल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

व्यवस्थित नामकरण इनके ग्रंथ को साहित्येतिहास लेखन को प्रमुख योगदान माना गया है।

इन्होंने कवियों की आलोचना में पारंपरिक दृष्टि को ही अपनाया तथा शैल्पिक श्रेष्ठता को ही कविता की श्रेष्ठता माना। इतिहासबोध का अभाव भी इनके ग्रंथ का एक प्रमुख दोष माना जाता है।

कुल मिलाकर मिश्रबंधु विनोद को साहित्येतिहास में सम्मान की दृष्टि से देखा जाते रहना तय है।

18/30 Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूफी दर्शन' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'सूफी' इस्लाम की उस धारा को कहते हैं जो एकेश्वरवाद पर तो अपना भरोसा दिखाती है परन्तु खुदा एवं बंदे की दूरी को प्रेम के माध्यम से मिटा देना ही जिसका लक्ष्य होता है।

यूँ तो इस्लाम में खुदा को अत्यन्त पवित्र मानते हुए मनुष्य को खुदा से प्रेम करने की मनाही है परन्तु सूफी दर्शन प्रेम को ही ईश्वर प्राप्ति का साधन मानता है।

सूफी दर्शन इश्कमजाजी (लौकिक प्रेम) से 'इश्कहकीकी' तक की यात्रा को प्रेममार्ग से करने पर जोर देता है तथा फना होकर बका हो जाना ही इसका लक्ष्य होता है।

सूफियों के अनुसार नफस, अक्ल, तथा कल्ब में कल्ब (हृदय) का महत्व सबसे ज्यादा है। उनके अनुसार ईश्वर ने बंदे को दो तरह के इल्म दिए हैं: इल्म ए सफीना' तथा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

'इल्म ए सिना' | 'इल्म ए सफीना'
वह ज्ञान है जो कुरान में स्थित है तथा
इल्म ए सिना' वह ज्ञान है जो ईश्वर
ने हमारे भीतर स्थापित किया है
सूफियों के अनुसार 'इल्म ए सिना' का
महत्व इल्म ए सफीना से ज्यादा है
तथा 'इल्म ए सिना' के अनुसार ईश्वर
की प्राप्ति प्रेम से ही हो सकती।
वे बंदे को खुदा की ही अभिव्यक्ति
मानते हैं तथा इश्कमजाजी से ही
इश्कहकीकी की प्राप्ति का उपाय करते
हैं।

सूफी दर्शन में गुरु का महत्व अत्यधिक
है। परन्तु सूफी मत में गुरु का
मनुष्य होना ही आवश्यक नहीं है।
तोता या अन्य कोई जानवर भी गुरु
की भूमिका में हो सकता है। पद्मावत
में "गुरु सुआ जेहिं पंथ दिखावा"
इसी मान्यता का संप्रेषण है।
सूफी दर्शन में इन्द्रिय नियमन, योग
तथा संगीत का महत्व भी विशेष है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुल मिलाकर देखा जाए तो सूफीपरंपरा एक समन्वयवादी दृष्टिकोण की स्थापना करती है तथा सांस्कृतिक ~~परिवेश~~ तथा धार्मिक वैमनस्यता को त्यागने का आह्वान करते हुए समाज को प्रेम की शिक्षा देता है।

11/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृष्णा सोबती हिन्दी के नारी लेखन की सशक्त हस्ताक्षर हैं। वे नयी कहानी की उसी परंपरा का निर्वाह करती हैं जो उनके दौर में मन्नू भंडारी, राजेन्द्र यादव आदि भी कर रहे थे।

कृष्णा सोबती का महत्व नारी की यौन वर्जनाओं के अतिक्रमण तथा साफगोई (बोल्डनेस) को लेकर सबसे अधिक है इन्होंने अपनी लम्बी कहानी 'मित्रो मरजानी' में बोल्डनेस को प्रतिस्थापित करते हुए यौन इच्छाओं को नैतिकता से अलग करने का प्रयास किया है। ~~कथ्य~~ इन्होंने अपने कहानी संकलन 'बादलों के घेरे' में एकतरफ जहाँ रोमानी प्रेम प्रसंगों की कहानियों की रचना की जिसमें 'कुछ नहीं कोई नहीं', 'बादलों के घेरे' आदि प्रमुख हैं तो दूसरी तरफ विभाजन के उन्माद में हो रहे मानव मूल्यों के क्षरण के समय भी मानवता की आस का दामन थामे हुए 'डरो मत' 'मैं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुम्हारी रक्षा करूँगा' जैसी कहानियों की रचना की।

कृष्णा सोबती का महत्व उनकी भाषा को लेकर अत्यधिक है। इन्होंने कथ्य के अनुरूप भाषा का चयन किया जिससे कि हर कहानी में भाषा की नई विशिष्टता सामने आती है। पंजाबी मिश्रित हिन्दी का प्रयोग करके पंजाब की संस्कृति को हिन्दी पाठकों के सम्मुख रख दिया।

शब्द चयन में यथार्थ के संप्रेषण को ध्यान में रखते हुए इन्हें जो आवश्यक लगा वे शब्द प्रयोग किये। जहाँ एक तरफ मनुक्ख, मौड़ा, मार आदि देशज शब्दों का प्रयोग किया वहीं गालियों के प्रयोग में भी नहीं हिचकिचाई।

कुछ आलोचकों ने भले ही इन्हे अश्लीलता करार देकर कटघरे में खड़ा करने का प्रयास किया हो परन्तु कृष्णा सोबती का महत्व हिन्दी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साहित्य में हमेशा वही माना जाता रहेगा जो 'द सेकेण्ड सेक्स' की लेखिका 'सिमोन द बाउआ' को यूरोप में मिलता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के महत्त्व के कारण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ध्रुवस्वामिनी जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'समस्या नाटकों' की श्रेणी की रचना है जो ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि के माध्यम से आधुनिक समस्याओं के हल खोजने का प्रयास करती है।

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का महत्व इसके कथ्य, नाट्यवस्तु तथा रंगमंचीयता तीनों की उत्कृष्टता को लेकर है। प्रसाद ने 'ध्रुवस्वामिनी की रचना अपने सशक्त, त्यागशील नारी चरित्रों की परंपरा में ही की है।

नाटक में ध्रुवस्वामिनी तथा रामगुप्त के माध्यम से यह समस्या उत्पन्न होती है कि 'क्या नारी को अयोग्य पति से मोक्ष (तलाक) का अधिकार है' प्रसाद ने इस मोक्ष का समर्थन किया है इसी प्रकार यह प्रश्न भी खड़ा होता है कि क्या मंत्रिपरिषद् को यह अधिकार है कि वे एक अयोग्य राजा को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सिंहासन से अपदस्थ कर योग्य व्यक्ति को राज्यकार्य सौंप दें ? प्रसाद ने इस मत का भी समर्थन किया है। अतः कथ्य के स्तर पर ध्रुवस्वामिनी का महत्व तत्कालीन 'नारी मोक्ष की प्रस्तावना' तथा राजनीतिक परिवर्तन की चाह' को लेकर है।

रंगमंचीय दृष्टि भी ध्रुवस्वामिनी का महत्व स्थापित करती है। ध्रुवस्वामिनी मंचन की सहजता के कारण प्रसाद के अन्य नाटकों से भिन्न है। इसमें सिर्फ तीन दृश्य हैं जिन्हें एकयवनिका तथा दो पर्दों की सहायता से मंचित किया जा सकता है। भाषा भी तत्समीपन को तो धारण करती है किन्तु अभिजात्यता की मोहत्याग कर प्रसाद ने कथ्य के सरल संप्रेषण पर ध्यान दिया है।

अपनी इन्ही विशेषताओं के कारण 'ध्रुवस्वामिनी' प्रसाद के सर्वाधिक मंचित किये जाने वाले नाटकों में से है तथा नारी चरित्रों का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सशक्त उदाहरण है।

Good 9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation